जनक चरण स्मरण

निज सुख प्रति सन्तोष, सतत चिन्ता स्वजनों की।
हरने को उद्यत दुश्चिन्ता दीन मनों की।
जन्म भूमि प्रति अमिट जुड़ाव दुराव न मन में।
सदा स्वल्प में तोष न लिप्सा कभी प्रचुर में।।1 ।।

न्याय पक्ष में खड़े अडिगता निर्भयता धर।
श्रम प्रेमी उद्यमी न माना कुछ भी दुष्कर।
निष्क्रिय ता पर कुपित पक्षपाती प्रति द्रोही।
ईश भक्ति रत किन्तु हो सके क्या निर्मोही। ।2 ।।

कृतसुदीर्घ संघर्ष अचल निष्ठा पर धारी।
पद पाकर भी नहीं बनें उत्पीड़न कारी।
व्यसनों से अति दूर द्रवित होते पर दुःख पर।
कोमल शुभ व्यवहार शान्ति स्मिति रहती मुख पर।।3।।

सदा प्रकृति से प्रेम नवल सर्जन में अभिरुचि।
आजीवन स्वाध्याय जन्य मति और चरित शुचि।
हितनिर्देशन स्रोत व्यग्र होते विचलन से।
होते छल से व्यथित मुदित अति द्वंद्व शमन से।।4।।

बीता वर्ष तृतीय गये उन को सुरपुर को।
अपर बनाया धाम स्वजन के प्रेमी उर को ।
तात रहेंगे सतत प्रेरणास्रोत हमारे।
बल दें प्रभु हम चलें उसी आदर्श सहारे। ।5।।

मकर संक्रान्ति। शिव कुमार
मिश्र

14:01:2025
कानपुर